bihar board class 9th hindi notes Chapter 3 ग्रामगीत का मम

लेखक-परिचय

-लक्ष्मीनारायण सुधांशु

ग्रामगीत का मम

18 जनवरी , 1908 ई . को जिला पूर्णिया (बिहार) के रूपसपुर नामक गाँव में लक्ष्मीनारायण सुधांशु का जन्म हुआ । ये काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम . ए , तक शिक्षा प्राप्त किये थे । साहित्य के अतिरिक्त राजनीतिक क्षेत्र के भी मुख्य कार्यकर्ता थे । बिहार विधान परिषद् के अध्यक्ष भी रहे थे । साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने पटना की ' अवन्तिका ' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन भी किया था । साहित्य के क्षेत्र में उनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार आलोचना है । ' काव्य में अभिव्यंजनावाद ' (1938 ई .) तथा ' जीवन के तत्व और काव्य के सिद्धांत ' (1942 ई .) उनके प्रमुख समीक्षा – ग्रन्थ हैं , पर साथ ही क्रांति – साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने कार्य किया है । ' भ्रातृप्रेम ' (1926 ई .) उनका उपन्यास है तथा ' गुलाब की कलियाँ ' (1928) , ' रसरंग ' (1921) कहानियों के संग्रह । ' वियोग ' शीर्षक उनका निबन्ध – संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है । '
सुधांशु ' की प्रतिभा समीक्षा के सैद्धान्तिक निरूपण में है और इसके लिए उन्होंने मनोविज्ञान , | सौन्दर्यशास्त्र एवं प्राचीन भारतीय काव्यशास्त्र के गहन अध्ययन द्वारा समुचित तैयारी की है । छायावाद की छाया तले पलने वाले इस समीक्षक पर रोमाण्टिक काव्य – शास्त्र का प्रभाव यथेष्ट है तथा उन्होंने रामचन्द्र शुक्ल की शास्त्रीयता की कड़ियों को ढीला करने का प्रयास किया है । जीवन के तत्व और काव्य के सिद्धान्त ' नामक पुस्तक में लेखक ने अपने समीक्षा सम्बन्धी विचारों को अधिक व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित करना चाहा है । इस पुस्तक में दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक आधार भूमि पर काव्यसिद्धान्तों को परखने की चेष्टा की गयी है । रोमाण्टिक काव्यशास्त्र की धारणाओं के अनुरूप उन्होंने आत्मभाव की अभिव्यक्ति को ही कला का मुख्य उद्देश्य माना है ।
काव्यानन्द की प्रक्रिया का मनोवैज्ञानिक विवेचन करके उन्होंने प्राच्य और पाश्चात्य दृष्टिकोणों को एक साथ समेटने की चेष्टा की है । संसार के समस्त व्यापारों के ओज स्वीकार करके वे काव्यानन्द को भी मन के अतिरिक्त ओज पर ही निर्धारित मान लेते हैं । काव्य के सृजन एवं आस्वादन से सम्बन्धित समस्याओं के अतिरिक्त लेखक ने इस कृति में लय और छन्द , ग्रामगीत की प्रकृति , कलागीत की प्रवृतियों आदि पर भी विचार किया है तथा अन्त में आधुनिक नौ कवियों की प्रवृत्तिमूलक समीक्षा भी की है । परन्तु यह पुस्तक जिस संकल्प को लेकर जिस व्यापक परिप्रेक्ष्य से प्रारम्भ की गयी थी , उसका निर्वाह नहीं हो सका । पूरी पुस्तक में न तो जीवन के तत्वों के आधार पर काव्य – सिद्धान्तों की ही सम्यक् व्याख्या बन पड़ी है । पुस्तक का अन्तिम अंश और विशेषतः व्यावहारिक समीक्षावाला भाग दलीय हो गया है ।

कहानी का सारांश:-

' ग्राम – गीत का मर्म ' शीर्षक प्रसिद्ध लेखक लक्ष्मीनारायण सुधांशु द्वारा लिखित चर्चित निबंध है। सुधांशु जी एक साथ साहित्य और राजनीति दोनों में सक्रिय थे । इस निबंध में उन्होंने ग्राम – गीतों के महत्त्व को प्रतिपादित किया है । संसार में प्राय : सभी जगह कविता का जन्म दंतकथाओं या ग्राम – गीतों से होता है । इनमें मानव मन के भावों की सहज अभिव्यक्ति होती है । उनमें बनावटीपन नहीं होता है । इनकी तरह सहजता बाद में रचे गए कलात्मक गीतों में नहीं होती है । ग्राम – गीतों से जीवन के महत्वपूर्ण समाधान के अलावा मनोरंजन भी होता है । स्त्री को प्रकृति से इन गीतों का गहरा संबंध है । पुरुष भी ग्राम – गीत गाते हैं परन्तु कुल मिलाकर इन गीता की प्रकृति स्त्रैण ही रही , पुरुषत्व का आक्रमण उन पर नहीं किया जा सका । स्त्रियों ने जहाँ कामल भावों को ही अभिव्यक्ति

https://www.evidyarthi.in/

की , वहाँ पुरुषों ने अवश्य ही अपने संस्कारवश प्रेम को प्राप्त करने को लिए युद्ध की घोषणा की । मानव जाति की दो मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं – प्रेम और युद्ध । इन दोनों का वर्णन ग्राम गीतों में मिलता है । ग्राम – गीत हृदय की वाणी है । इसमें तर्क बुद्धि नहीं चलती । इसमें भावों का कलकल छलछल प्रवाह मिलता है जिसमें डुबकी लगाकर मनुष्य अपना दुःख – दर्द सब भुला बैठता है । परिष्कृत साहित्य के नायक राजा – रानी , राजकुमार – राजकुमारी आदि ही बनत थे । उनमें धीरोदात्तता , दक्षता , तेजस्विता , रूढ़वंशता , वाग्मिता आदि गुण स्वाभाविक माने जाते थे । परंतु ग्राम – गीतों में जन – साधारण से ही नायक – नायिका लिये जाते थे । ग्राम – गीतों में वर्णित दशरथ , राम , कौशल्या , सीता , लक्ष्मण , कृष्ण , यशोदा आदि जन – साधारण के चरित्र को ही प्रकट करते हैं , पौराणिक चरित्र को नहीं । आज भी बच्चे राजा – रानी , भूत – प्रेत की कथा सुनने के लिए उत्सुक रहते हैं । वैसे ही कुछ व्यक्ति ग्राम – गीतों से उद्वेलित होते हैं । मानव जीवन का पारस्परिक संबंध सूत्र कुछ ऐसा विचित्र है कि जिस बात को हम एक काल और एक देश में बुरा समझते हैं , उसी बात को दूसरे काल और दूसरे देश में अच्छा मान लेते हैं । प्रेम या विरह में समस्त प्रकृति के साथ जीवन की जो समरूपता देखी जाती है वह क्रोध , शोक , उत्साह , विस्मय , जुगुप्सा आदि में नहीं । विरहाकुल पुरुष पशु , पक्षी , लता , द्रुम सबसे अपनी वियुक्ता प्रिया का पता पूछ सकता है किंतु क्रुद्ध मनुष्य अपने शत्रु का पता प्रकृति से नहीं पूछता है ।

https://www.evidyarthi.in/